Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

फ़िल्मी संगीत में बसंत ऋतु संबंधित गीतों का प्रभाव

AMIT YADAV[1] & PROF. ALKA NAGPAL[2]

[1]Research Scholar, Faculty of Music and Fine Arts, Delhi University, Delhi
[2]Head and Guide, Faculty of Music and Fine Arts, Delhi University, Delhi

सार

फिल्मी संगीत में बसंत ऋतु से संबंधित गाने आमतौर पर उत्साह, प्रेम और प्राकृतिक के सौन्दर्यानुभूति करने का कार्य करते हैं। इन गीतों में फूल-पत्ते, पंख और हरियाली के साथ बसंत की झलक महसूस होती है, जो सुनने वालों को आनंददायक और रमणीय माहौल में डालता है। इसके अलावा, बसंत ऋतु के गाने प्रेम और रोमांस के दृष्टिकोण से भी सामरिक होते हैं, जिससे वे सुनने वालों को मनोहर और प्रेम प्रसंगयुक्त अनुभव प्रदान करते हैं। प्रस्तुत शोधपत्र बसंत ऋतु एवं बसंत राग के आपसी संबंध को दर्शाता है। बसंत ऋतु के बाद बसंत राग का विवरण बताया गया हैं। फिल्मी संगीत के अंतर्गत बसंत ऋतु से संबंधित गीतों का सारांश देते समय, यह महसूस होता है कि बसंत गीतों ने भारतीय सिनेमा को एक नए और सुरीला माहौल प्रदान किया है। इस पत्र में बसंत ऋतु का वर्णन कर हिंदी फ़िल्मी गीतों में बसंत ऋतु संबंधित गीतों के प्रभाव पर प्रकाश डाला गया है। बसंत गीतों का संगीत भी उत्साहभरा और स्वरमय होता है। फ़िल्मी गीतों में इस राग की सौन्दर्यात्मक वृद्धि के लिए महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले वाद्यों के बारे में भी बताया गया हैं तथा कुछ गीतों के वाद्य धुनों की मधुर स्वरावली को दर्शाया गया हैं। संगीतकारों ने ताल, सुर, और संगीतीय उपकरणों का सही समावेश करके इन गानों को लोगों के दिलों में बसा दिया है। बसंत राग से संबंधित फ़िल्मी गीतों में अनेक निर्देशकों एवं कलाकारों जैसे रोशन, एस. डी. बर्मन, मदनमोहन, सी. रामचंद्र, बसंत देशाई, शंकर-जयकिशन आदि ने महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। इनकी कुछ प्रमुख फ़िल्मों का वर्णन इस पत्र में किया गया हैं।

महत्वपूर्ण शब्द – बसंत ऋतु, फिल्मी संगीत, भारतीय सिनेमा, बसंत राग, गीत, वाद्य ।

बसंत ऋतु

'ऋतुसंहार' का शाब्दिक अर्थ है- ऋतुओं का समूह। भारत ऋतुओं का देश कहा जाता है। भारत में ग्रीष्म, वर्षा, शरद्, हेमंत, शिशिर व बसंत ऋतु मिलकर कुल छः ऋतुएँ होती हैं। इन ऋतुओं का समय दो-दो महीने का होता है। फाल्गुन व चैत्र का महीना बसंत ऋतु का माना जाता है। प्रकृति के रोमांस के साथ ही यह मौसम सृजन का मौसम है। भारत में वसंतोत्सव के साथ एक तरफ, सरस्वती पूजन की परंपरा रही है तो कामदेव पूजन से जोड़कर इस मदनोत्सव के तौर पर मनाने का चलन भी है। बसंत पंचमी को अक्सर भारत का अपना वैलेंटाइन डे या प्रेम पर्व भी कहा जाता है। क्या आपको पता है कि संगीत में बसंत कैसे बसा हुआ है? हिंदोस्तानी शास्त्रीय संगीत में राग पद्धति है और राग इस तरह के विज्ञान पर आधारित हैं कि समय तक निश्चित है। यानी किस तरह का संगीत किस समय के अनुकूल है, यह भी विवेचना की गई है. गाने, बजाने और सुनने से मन में किस तरह के भाव या रस का सृजन होता है, इसे ध्यान में रखकर मौसम और प्रहर तक तय किए गए हैं।

बसंत ऋतु के लिए राग बसंत सबसे ज़्यादा लोकप्रिय राग है। 'केतकी गुलाब जुही चंपक बन फूले' से लेकर अनेक मधुर फिल्मी गीत इस राग में रचे गए। राग बसंत कुछ और कारणों से काफी अहम है। बसंत ऋतु के दौरान इसे कभी भी गाये, बजाये जाने की छूट है। विशेष बात यह है कि इस राग के गायन से प्रकृति खुश होती है। शास्त्रीय संगीत की विद्वान डॉ. अणिमा अष्ठाना कहती हैं कि सही ढंग से इस राग को छेड़ा जाए तो पौधों और फसलों के विकास की गति बढ़ जाती है। फाग या होली के रंग बिरंगे गीत इस राग में काफी मिलते हैं। यही नहीं, ये राग हमारे मन और जीवन पर बहुत असर डालते हैं। इसकी चर्चा हम आगे करेंगे। इस ऋतु से वातावरण मोहक व रमणीय बन जाता है। यह ऋतु रसिकों की ऋतु कहलाती है। प्राकृतिक की आभा इसी ऋतु में अपने चरम सौंदर्य पर देखी जा सकती है। चारों तरफ फल व फूलों की बहार देखते ही बनती है। यह ऋतु हर जन-मानस का मन हर लेती है। इस

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

ऋतु की सुंदरता के कारण ही इस ऋतु को ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है। बसंत ऋतु के साथ-साथ बसंत राग का भी अपना अनूप सौंदर्य है, जिसका वर्णन इस प्रकार है -

इस राग का वर्णन श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम में इस प्रकार प्रस्तुत है-

पूर्वीमेलसुसञ्जातो वसन्ताख्यो बुधैर्मतः।

सम्पूर्णस्तारषड्जांशो वसन्ततौं सुखप्रदः॥[1]

विद्वानों के मतानुसार पूर्वी मेल जन्य राग बसंत सम्पूर्ण स्वरीय है, तथा उसमें तार षड्ज वादी है, एवं वह वसन्त ऋतुगेय राग है।

राग बसंत

पं. भातखण्डे जी के अनुसार एक प्रकार में दोनों मध्यम तथा धैवत शुद्ध लगाकर पंचम वज्र्य करते हैं और दूसरे प्रकार में कोमल धैवत लगाकर यह राग सम्पूर्ण माना जाता है। इसका वादी स्वर तार षड्ज और सम्वादी स्वर पंचम माना जाता है। तीव्र धैवत लगने वाले प्रकार में पंचम को वज्र्य करके शुद्ध मध्यम को सम्वादी मानते हैं अपने यहाँ पूर्वी ठाट जन्य प्रकार अधिक लोकप्रिय है। इस राग में ऋषभ धैवत कोमल तथा दोनो मध्यम का प्रयोग होता है शेष स्वर शुद्ध प्रयोग होते हैं। आरोह में ऋषभ तथा पंचम वर्जित होते हैं पं. विनायक राव पटवर्धन जी के अनुसार इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है, अन्य विद्यानों ने भी औडव सम्पूर्ण माना है। इसका गायन समय, मध्य रात्रि के पश्चात् माना गया है।[2] इस राग के गीतों में वसंत ऋतु का वर्णन प्रायः पाया जाता है। राग रागिनियों के वर्गीकरण को स्वीकार करने वाले कई एक ग्रंथों में बसंत को पुरूष रागों की श्रेणी में गिनाया गया है।[3]

फ़िल्मी गीत

बसंत ऋतु की झलक हिंदी फ़िल्म सिनेमा में भी अच्छी तरह देखने को मिलती है। बसंत ऋतु में गाए-बजाए जाने वाले रागों के माध्यम से इस ऋतु का सौंदर्य प्रकट होता आ रहा है। हम फ़िल्मों में संगीत के आरंभ होने की चर्चा इस प्रकार से कर सकते है। फिल्म संगीत का जन्म और विकास दोनों सन् 1931 की सवाक फिल्म 'आलमआरा' से हुआ। इस फ़िल्म में फिरोजशाह एम. मिस्त्री एवं बी. ईरानी ने संगीत दिया था।[4] इसमें पहला गाना "दे-दे खुदा के नाम पे", डब्ल्यू. एम. ख़ान ने गाया था। इन नाटकों में तड़क-भड़क थी और गीतों तथा रागबद्ध संगीत का प्रयोग इनकी मुख्य विशेषता थी। इस फ़िल्म में हारमोनियम, तबला व सारंगी का ही प्रयोग किया गया था। इसमें सात गाने थे।[5]

फिल्म-संगीत की इस महान लोकप्रियता के पीछे कई महान संगीतकर, निर्देशकों, गीत लेखकों, गायक व गायिकाओं का अथक परिश्रम व उनकी अडिग साधना छिपी हुई है। शास्त्रीय संगीत जो आम जनता से कोसों दूर रहता है, फिल्म-संगीत के द्वारा उसने सामान्य जन में सम्मान का स्थान पाया। इस कार्य को करने में जिन महान संगीतकारों का योगदान रहा है, उनमें - रोशन, एस.डी. बर्मन, मदनमोहन, सी. रामचन्द्र, बसंत देसाई, शंकर-जयकिशन इत्यादि विशेष रूप से उल्लेखनीय है।

1930 के दशक की फ़िल्में

बेहतरीन गीत संगीत से भरपूर 1934 की उल्लेखनीय फ़िल्म 'न्यू थियेटर्स' की 'चण्डीदास' थी। इसमें उमा शशि और सहगल ने गीत गाये व प्रमुख भूमिका निभाई। इसके गाने 'प्रेमनगर में बनाऊँगी घर मैं तजके सब संसार' तथा 'तड़पत बीते दिन रैन' बहुत ही लोकप्रिय हुए।[6] इसके संगीतकार रायचन्द्र बोराल थे। चित्रपट चंडीदास के बांगला व हिन्दी रूपांतरों से रायचन्द्र बोराल और चित्रपट निर्देशक देवकी बोस ने बैकग्राउंड म्यूजिक के उपयोग की शुरुआत की। इस फ़िल्म में उमा शशि की आवाज में 'बसंत ऋतु आई आली, फूल खिले डाली-डाली' गीत जो राग बसंत पर आधारित है। इस गीत में सारंगी वाद्य की आवाज ने खूबसूरती को ओर भी बढ़ा दिया है, जिससे राग बसंत खिल कर प्रकट होता सुना जा सकता है। इस गीत को सुनकर बसंत यानी फूल ही फूल,

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

पंछियों का चहकन एवं हवा में खुशबू और मन में तरंग का मौसम जैसी उमंग जाग उठती है। इसके बोल 'आगा हशर कश्मीरी' ने लिखे थे। इस फ़िल्म की कहानी कवि चंडीदास के जीवन की समस्याओं पर आधारित है। फिल्मी संगीत में शास्त्रीयता केवल वहीं तक मिलती है, जहाँ तक वह जनता जनार्दन के चित्त को अनुरंजित कर सकने में समर्थ है। विभिन्न अवसरों पर अनुभूतियों को प्रेषित करने के लिए अनुकूल रागों का प्रयोग फिल्मों में किया गया है। लेकिन ऐसे गीत बहुत कम मिलेंगे, जो पूर्णतः शास्त्रानुकूल हों।

1950 के दशक की फ़िल्में

50 के दशक में संगीतकार नौशाद ने 'शबाब' फ़िल्म का गीत 'चंदन का पलना रेशम की डोरी' हेमन्त कुमार और लता मंगेशकर द्वारा गाए गीत, 'जोगन बन जाऊँगी सैंया तोरे कारण' स्वर लता मंगेशकर और 'मरना तेरी गली में, जीना तेरी गली में' स्वर लता मंगेशकर का, गीतों की सुन्दर रचनाएँ प्रस्तुत कीं। इसी चित्रपट में 'दया कर हे गिरधर गोपाल' शास्त्रीय गीत अमर शास्त्रीय गायक अमीर ख़ाँ साहब ने गाया।[7] राग बसंत पर आधारित इसी फिल्म का गीत 'मन की बीन मतवारी बाजे' है। इस गीत की शुरुआत सितार वाद्य के झाले के साथ होती है जो आरंभ में आलाप के बाद धीमी लय के साथ शुरू होता है और लय बढ़ने के साथ-साथ गीत की सौन्दर्यात्मक वृद्धि होती जाती है और राग स्पष्ट दिखाई देता है। तत्पश्चात गीत का गायन आरंभ होता है। तीनताल के सुंदर ठेके के साथ बीच-बीच में ताने मन को मोह लेती है और अंत में सितार और वायलिन दोनों वाद्यों की मधुर आवाज का इस गीत में एक विशेष छाप दिखाई देती है।

सन् 1956 में शंकर-जयकिशन की इस जोड़ी ने फिर से चित्रपट संगीत की दुनिया में, चित्रपट 'बसन्त बहार' का संगीत निर्देशन कर, एक क्रांति उत्पन्न की। इस वर्ष का, गीत-संगीत की दृष्टि से यह सर्वश्रेष्ठ चित्रपट था और गीत-संगीत भी ऐसा, जो क़यामत तक रहेगा। प्रत्येक गीत में सुरों की आत्मा के दर्शन होते हैं। सुर के साधकों ने इस चित्रपट के गीतों की सुरीली परम्परा को बखुबी निभाया है। इस फ़िल्म में कुल नौ गीत है जिसमें एक गीत 'केतकी गुलाब जूही चम्पक बन फूले' जिसके स्वर पंडित भीमसेन जोशी व मन्ना डे की मधुर आवाज से स्वरबद्ध है। इसका संगीत दिया है शंकर-जयकिशन ने और संगीत-लिपि देवकीनंदन धवन द्वारा किया गया है। इस गीत की शास्त्रीयता गायकों के नाम जानने पर ही प्रमाणित हो जाती है। बसंत और बसंतबहार रागों के आधार पर निर्मित की गई यह एक परंपरागत शास्त्रीय ढंग की बंदिश है भीमसेन जोशी के गले का माधुर्य मन्ना डे की अपेक्षा अधिक रहा है। मन्ना डे ने एक माने हुए ठोस शास्त्रीय गायक के साथ गाते हुए भी स्वयं को शिथिल पड़ने से बचाया है, यह उनकी सफलता का स्वतः प्रमाण है।

इस गीत में एक लाइन 'ऋतु बसंत अपनो कंत गोरी गरवा लगाए, झुलन में बैठ आज पी के संग झूले' में बसंत ऋतु का सचित्र वर्णन किया गया है और साथ ही सारंगी एवं तबला का सुंदर प्रयोग सुनने को मिलता है। सारंगी पर बसंत राग की तिहाई इस प्रकार है - सांनि धप म॑ग रेस, ग म॑ धनि सं। इस अंग में बसंत की मनमोहन झलक देखने को मिलती है। जिस प्रकार वसन्त के आगमन पर कोयल की मधुर आवाज सारे वातावरण को सुखमय बना देती है। चारों ओर पक्षियों के कलरव और भ्रमरों की गुंजार से समस्त बन-बाग मुखरित हो उठते हैं। ऐसा मालूम होता है कि बसन्त के स्वागत के लिए सभी पशु-पक्षी प्रतीक्षा कर रहे हो, और इस ऋतु के आते ही पशु-पक्षी अपनी मधुर ध्वनि से सभी को आनन्दित कर देते हैं।8 इस तरह बसंत का हमें सुंदर वर्णन इस गीत में देखने को मिलता है।

1960 के दशक की फ़िल्में

सन 1966 में प्रदर्शित हुई फिल्म 'सौ साल बाद', गीत-संगीत की दृष्टि से लाजवाब था। हो भी क्यों नहीं, स्वरों के बादशाह लता व मन्ना डे का कमाल जो था। इसमें संगीत दिया है लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल जी ने और गीत लिखे है आनंद बख्शी जी द्वारा। इसका एक

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 11, Issue 02, July-December, 2023
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2023

गीत 'एक ऋतु आए, एक ऋतु जाए, दीप जलाए, दीप बुझाए, कभी हँसाए, कभी रुलाए' जिसका गायन लता व मन्ना डे की मधुर आवाज का जादू है। विभिन्न ऋतुओं में उत्पन्न भावों तथा दृश्यों को काव्य और संगीत के माध्यम से प्रस्तुत करने वाला यह उच्चस्तरीय गीत राग धन्यधैवत, आभोगी, मेघमल्लार और बसंत बहार - इन चार रागों के आधार पर निर्मित किया गया है। प्रारंभ धन्यधैवत से होता है। यह मारवा ठाठ का अप्रचलित राग है। तत्पश्चात् विरह-व्यग्र नायिका की भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए दक्षिणी राग आभोगी के समूह का अद्भुत इस्तेमाल किया गया है। बंदिश अत्यंत क्लिष्ट, किंतु तीखी वेदना को अभिव्यक्त करने वाली है। लता मंगेशकर की गायन-कुशलता का यह गीत साक्षात् प्रमाण है। इसके बाद राग मेघमल्लार का प्रयोग हुआ है। मृदंग की संगति और गायकों की कुशलता ने बसंत-कालीन वातावरण को अनुभूति के स्तर पर साकार करने में प्रशंसनीय सफलता प्राप्त की है। अंत में बसंत ऋतु के प्राकृतिक सौंदर्य को बसंत-बहार के द्वारा चित्रित किया गया है।

बसंत संबंधित गीतों में वाद्यों का प्रयोग

फिल्म 'सौ साल बाद' की अगर बात करे तो इस फ़िल्म में लता और मन्ना डे की युगलबंदी आकर्षक रही है। तानों का प्रयोग चमत्कारी है। पूरे गीत में वातावरण परिवर्तन व राग-परिवर्तन के लिए बीच-बीच में पाश्र्व संगीत में सारंगी, बांसुरी तथा संतूर अद्भुत कुशलता से प्रयुक्त हुए हैं। संपूर्ण गीत संयोजन प्रशंसनीय है।[9] इस गीत में राग बसंत-बहार का वर्णन में यह कहना उचित होगा कि जब यह गीत राग बहार में प्रवेश करता है तो लय द्रुत होती है और संतूर वाद्य के तारों की सुंदर टंकार को सुना जा सकता है। तत्पश्चात बाँसुरी की मधुर ध्वनि के साथ इस गीत में राग बसंत का सौन्दर्य वर्णन स्पष्ट सुन सकते है। बाँसुरी पर बाजई गयी बसंत की स्वरावली इस प्रकार है –

(प)म॑ धम॑ ध नि सं - - - - - - - (प) म॑ - - धपम॑ पम॑ धसं धसं नि ध पम॑ - - - ग म॑ ग म॑रे स - स म - - - - - - - ग मम॑ ग - - म॑ म॑a रें -नि ध निध प - - म॑ग, - - म॑धम॑ ध, धनि सं - - -

इसके बाद मृदंग वादन का आरंभ होता है। इस गीत की लाइन 'खिल गयी कलियाँ, नैना ढूंढे साजन की गलियाँ' बसंत-बहार राग पर आधारित हैं। बसंत की मादकता प्रेमियों के तन, मन, प्राण को संयोग के बंधन में बांधने के लिए विवश कर देती है। काम सखा बसंत का प्रभाव बड़ा विशद एवं व्यापक है। इसमें नायिका अपने नायक के लिए कुछ पंक्तियों (राग बसंत बहार) के माध्यम से कहती है। बसंत ऋतु दर्शाने के लिए इस गीत में आलम्बनपरक चित्रपट प्रस्तुत किये गए हैं जो हमें गीत के बोल द्वारा ज्ञात होता है। बसंत ऋतु में कोयल कूकने लगती है, फूलों की कलियां विकसित हो जाती हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि चारों ओर बसंत की बहार आ गयी हो। इन्हीं उपादानों का सहारा लेकर इस फ़िल्म को फ़िल्माया गया है।

बसंत ऋतु से जुड़े गीत आमतौर पर प्रेम और उत्साह के विभिन्न रूपों की अभिव्यक्ति करते हैं। गीतों में प्रकृति की सुंदरता, फूलों की खुशबू और हरियाली की उत्कृष्टता उत्साह भरे संगीत के साथ दर्शकों को महसूस होती है। इन गीतों में उजागर होने वाली प्रेम कथाएं दर्शकों को रोमांटिक और सुरीला माहौल में ले जाती हैं। इन गानों के बोल और संगीत से उत्साह और प्रेम की भावना सजीव हो जाती है, जो व्यक्तिगत और सामाजिक संबंधों को मजबूती से प्रदर्शित करती है। इस प्रकार, बसंत ऋतु संबंधित गीतों का प्रभाव सिनेमा को एक अद्वितीय अनुभव प्रदान करता है जो न केवल सुंदरता का रंग भरता है, बल्कि व्यक्तिगत और सामाजिक भावनाओं को भी समृद्धि प्रदान करता है।

निष्कर्ष

फिल्मी संगीत में बसंत ऋतु संबंधित गीतों का प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि ये गीत न केवल व्यक्तिगत रूप से आनंदित करने में मदद करते हैं, बल्कि वे समग्र दृश्य को रंगीन बनाने और दर्शकों को भावनाओं का अहसास कराने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। निष्कर्ष तौर पर हम यह कह सकते है की किसी भी महफिल में रंग जमाने वाले राग बसंत अथवा इसके भिन्न-भिन्न

प्रकार अपने लचीलेपन, अनुशासन और खूबसूरती के लिए जाने जाते है। प्रकृति को पतझड़-हरियाली और सृष्टि को नवजीवन देने वाला बसंत, उल्लास और उत्सव की ऋतु होती है। मानव मन में इस उल्लास, उत्साह का उत्सवी रूप में ढालने के लिए बसंत ऋतु के दौरान गाए जाने वाले गीत संगीत की भी अपनी महत्वपूर्ण प्रधानता होती है। बसंत अथवा बसंत-बहार राग का प्रयोग कई फिल्मों में किया गया है। बसंत ऋतु का गीत-संगीत से गहरा जुड़ाव है। फ़िल्म संगीत की दुनिया में जाए तो अकेले इस ऋतु में जितने तरह के गीत गाए अथवा बजाए जाने का चलन रहा है या परंपरा रही है, उतना ही बसंत रूपी भाव एवं रस प्रकट होता है, पर फ़िल्म संगीत से इतर हिंदुस्तानी संगीत, शास्त्रीय संगीत की दुनिया में भी जाएं तो बसंत से रागों का वैसा ही समृद्ध जुड़ाव दिखता है। अनेक राग हैं, जिनका जुड़ाव बसंत से जुड़ता है। उन्हीं में एक लोकप्रिय राग बहार भी है। इसमें निष्कर्ष के तौर पर हम यह कह सकते है कि सभी ऋतुओं के त्यौहारों का अपना अलग ही रंग, उत्साह व सौंदर्य प्रकट होता है। जिसमें बसंत ऋतु का इस शोध-पत्र में फ़िल्म संगीत के भिन्न-भिन्न गीतों का बसंत रूपी सौंदर्य देखने को मिला है। जिसमें प्रयोग होने वाले विभिन्न वाद्य यंत्रों एवं गायन की अपनी अलग-अलग भूमिका रही है एवं इन सभी का अपना महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मैनें अपने इस शोध पत्र में इन्ही सभी महत्वपूर्ण बिंदुओं का बसंत राग और उनका बसंत ऋतु के साथ संबंध को दर्शाने का प्रयास किया है।

सन्दर्भ ग्रंथ

1. पं. भातखण्डे, श्रीमल्लक्ष्यसंगीतम, श्लोक संख्या 107
2. ठाकुर, पं ओकारनाथ, संगीताञ्जलि, श्री कला संगीत भारती प्रकाशन, भाग-छः, जनवरी 1962, पृ. 109
3. ठाकुर, पं ओकारनाथ, संगीताञ्जलि, श्री कला संगीत भारती प्रकाशन, भाग-छः, जनवरी 1962, पृ. 109
4. हमराज, हरमिन्दर सिंह, हिन्दी फ़िल्म गीत कोश, खण्ड-1, 1988
5. वही
6. शुक्ला, वी.के., कुछ पुराने चित्रपटों के गीत-संगीत पर एक नज़र, अगस्त, 1981, पृ० 25
7. दैनिक भास्कर 'नवरंग', वीरवार, 25 मार्च, 2004
8. मिश्र, डा. निधि, उत्तरवर्ती रीतिकवियों के ऋतुवर्णन, आशा पब्लिशिंग कम्पनी, 2011, पृ. 143
9. गर्ग, डॉ. लक्ष्मीनारायण, संगीत-फ़िल्मी शास्त्रीय गीत अंक, हाथरस प्रकाशन, उ.प्र., 1973, पृ. 130